## PAPER-III POLITICAL SCIENCE

## Signature and Name of Invigilator

1. (Signature)	
(Name)	Roll No.
2. (Signature)	(In figures as per admission card)
(Name)	_
	Roll No
D 0 2 1 1	(In words)

Time :  $2^{1}/_{2}$  hours] [Maximum Marks : 200

Number of Pages in this Booklet: 32

#### **Instructions for the Candidates**

- 1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
- Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

### No Additional Sheets are to be used.

- 3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below:
  - (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
  - (ii) Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.
- 4. Read instructions given inside carefully.
- 5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
- 6. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, you will render yourself liable to disqualification.
- 7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
- 8. Use only Blue/Black Ball point pen.
- 9. Use of any calculator or log table etc., is prohibited.

## परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

Number of Ouestions in this Booklet: 19

- 1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
- लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।
  इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
- 3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्निलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है .
  - (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
  - (ii) कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।
- 4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
- उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मुल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
- 6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
- 7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
- केवल नीले/काले बाल प्वाईट पेन का ही इस्तेमाल करें ।
- िकसी भी प्रकार का संगणक (केलकुलेटर) या लॉग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।

D-02-11 P.T.O.

# POLITICAL SCIENCE राजनीतिशास्त्र

PAPER – III प्रश्नपत्र – III

**Note:** This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट: यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड हैं । अभ्यर्थी को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार दें ।

## **SECTION - I**

## खंड – ।

**Note:** This section consists of **two (2)** essay type questions of **twenty (22)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each.  $(2 \times 20 = 40 \text{ marks})$ 

नोट: इस खंड में बीस-बीस अंकों के दो निबन्धात्मक प्रश्न हैं। प्रत्येक का उत्तर लगभग पाँच सौ (500) शब्दों में अपेक्षित है।  $(2 \times 20 = 40 \text{ sia})$ 

1. Discuss Gandhi's Theory of Swaraj. गांधीजी के स्वराज-सिद्धान्त की विवेचना करें।

### OR / अथवा

Discuss critically Maurice Duverger's classification of political parties. राजनीतिक दलों के मॉरिस डुवर्गर के वर्गीकरण की आलोचनात्मक विवेचना करें ।

### OR / अथवा

Discuss the problems of Nation-Building in India. भारत में राष्ट्र-निर्माण की समस्याओं की विवेचना करें ।





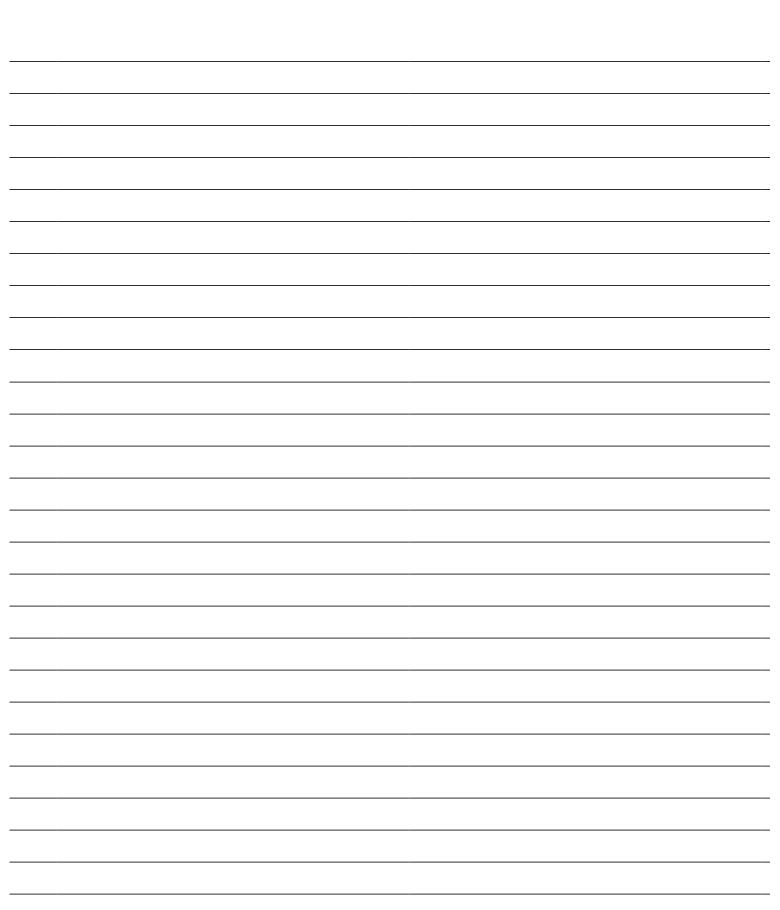

2.	Discuss the process of planning after the introduction of the policy of economic reforms. आर्थिक सुधारों की नीति लागू करने के बाद की नियोजन प्रक्रिया की विवेचना करें ।
	<b>OR / अथवा</b> Examine India's nuclear policy with reference to Indo-American deal. इंडो-अमेरिकन सौदे के प्रसंग में भारत की नाभिकीय (न्युक्लिअर) नीति की जाँच करें ।
	OR / अथवा
	Bring out the differences amongst the classical social contractualists (Hobbes, Locke, Rousseau) on their views of the state of nature. प्राकृतिक अवस्था के बारे में क्लासीकीय सामाजिक संविदावादियों (हॉब्स, लॉक, रुसो) के बीच मतभेदों को उजागर करें।



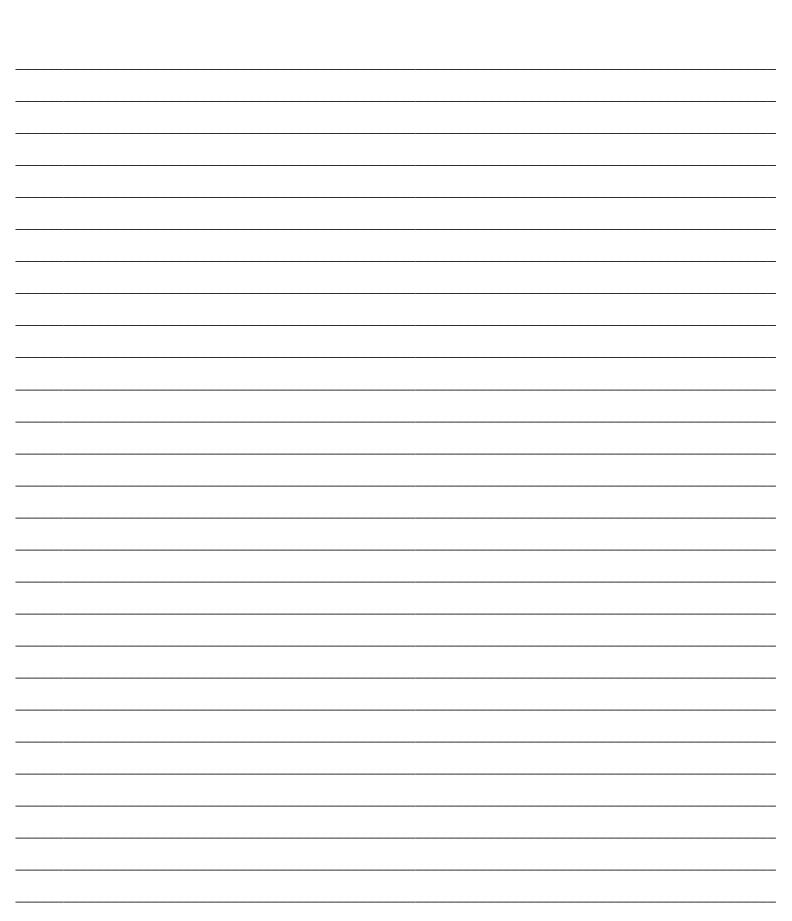

	SECTION – II
	खंड – II
Note:	This section contains three (3) questions of fifteen (15) marks each, each to be answered in about three hundred (300) words. $(3 \times 15 = 45 \text{ Marks})$
नोट :	इस खंड में <b>पन्द्रह-पन्द्रह</b> (15) अंकों के <b>तीन</b> (3) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग <b>तीन सौ</b> (300 शब्दों में अपेक्षित है । (3 × 15 = 45 अंक
3.	Explain Gramsci's views on the relationship between State and Civil society. राज्य और नागरिक समाज के बीच सम्बन्ध पर ग्राम्सी के विचारों को स्पष्ट करें ।
4.	Discuss the present status of the Ninth Schedule of the Constitution of India. भारतीय संविधान की नौंवी अनुसूची की वर्तमान स्थिति की विवेचना कीजिये ।
5.	Trace the origin and evolution of 'war crimes' and its present status. युद्ध(कालीन) अपराधों की उत्पत्ति तथा उद्विकास तथा उसकी वर्तमान स्थिति का पता लगाइये ।







<del>_</del>
 ·····



<del>_</del>

	SECTION – III	I
	खंड — III	
Note:	This section contains <b>nine</b> (9) questions of <b>ten</b> in about <b>fifty</b> (50) words.	(10) marks each, each to be answered $(9 \times 10 = 90 \text{ Marks})$
नोट :	इस खंड में <b>दस-दस</b> (10-10) अंकों के <b>नौ</b> (9) प्रश्न हैं । प्र अपेक्षित है ।	त्येक प्रश्न का उत्तर लगभग <b>पचास</b> (50) शब्दों में ( <b>9 × 10 = 90 अंक</b> )
6.	'Aristotle's Ideal State is the second best State 'अरस्तु का आदर्श राज्य प्लेटो का दूसरा सर्वोत्तम राज्य है ।	

7.	Mao's theory of contradictions. माओ का 'अन्तर्विरोध का सिद्धान्त' ।
8.	First-past-the-post system. फर्स्ट-पास्ट-दी-पोस्ट प्रणाली

 <del></del>	
9.	Huntington's critique of Modernization theory. आधुनिकीकरण सिद्धान्त के बारे में हंटिनाटन की आलोचना

10.	Article 370 of the Constitution of India. भारत के संविधान का अनुच्छेद 370.		

11.	Position of Governor in State Administration. राज्य प्रशासन में राज्यपाल की स्थिति
12.	The principle of 'Unity of Command'. 'आदेश की एकता' का सिद्धान्त

13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य
13.	Feminist perspective in International Relations. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य

14 India and ACEAN
14. India and ASEAN. भारत और आसियान

### **SECTION - IV**

## खंड-IV

**Note:** This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

 $(5 \times 5 = 25 \text{ Marks})$ 

नोट : इस खंड में निम्निलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच** (5) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस** (30) शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच** (5) अंकों का है । (5 × 5 = 25 अंक)

International-relations research has been guided by a variety of concepts, theories, models and paradigms. One widely cited authority on the history of science, Thomas S. Kuhn, has suggested that in the natural sciences, periods of "scientific revolution" have alternated with eras of "normal science." One set of concepts has furnished the basis for cumulative knowledge only eventually to be discarded and superseded by yet another paradigm. Science advances in such a fashion that one dominant paradigm is replaced by another, with each in turn furnishing a new framework for intellectual inquiry, setting the research agenda, and providing the basis for the cumulative growth of scientific knowledge and theory. He defines scientific revolutions as "noncumulative developmental episodes in which an older paradigm is replaced in whole or in part by an incompatible new one."

According to Arend Liphart, the study of international relations has followed such a pattern of development. The traditional paradigm, based on conceptions of state sovereignty and international anarchy, was challenged, as noted previously, even though a large body of theory about international relations had evolved, dating from antiquity and furnishing a "basis for a coherent tradition of research." The scientific revolution embodied in the quantitative and behavioural phase was based on a large number of new approaches and methodologies. It was believed that Kuhn's characterization of paradigmatic change in the natural sciences was similarly applicable in the social sciences. In turn, the paradigm that eventually emerged in the study of international relations, it was assumed, would form the basis for broad theoretical advances based on the widespread application of agreed methodologies to important research questions. It is this assumption that has been questioned, and often rejected, by the advocates of postbehavioral, postpositivist, and post-modernist approaches to international-relations theory. In this interpretation, however valid the applicability of Kuhn's understanding of paradigmatic development for the physical sciences, it does not provide an adequate explanation of the evolution of internationalrelations theory. In retrospect, the behavioralist phase was focused more on research methods, or methodology, as a basis of theory, rather than on the development of a new paradigm or other theoretical basis for building theory.

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर शोध विविध प्रकार की अवधारणाओं, सिद्धान्तों, प्रारूपों और प्रतिमानों द्वारा मार्गनिर्देशित होता है। विज्ञान के इतिहास पर अत्यधिक उल्लेखित व्यक्ति, थॉमस एस. कून, ने बताया है कि प्राकृतिक विज्ञानों में, "वैज्ञानिक क्रान्ति" के युग "सामान्य विज्ञान के युगों के साथ प्रत्यावर्तित हुए हैं।" अवधारणाओं के एक समृह ने संचयी ज्ञान के लिये आधार जुटाया है परन्तु अन्तत: अभी भी एक अन्य

प्रतिमान द्वारा बाहर निकाल फैंकने और स्थान लेने की गुंजाइश है । विज्ञान इस ढंग से तरक्की करता है कि एक प्रमुख प्रतिमान अन्य के द्वारा प्रतिस्थापित होता है, जहाँ प्रत्येक, बदले में, बौद्धिक जाँच-पड़ताल के लिये नूतन ढ़ाँचा जुटाता है, शोध कार्यसूची निर्धारित करता है, और वैज्ञानिक ज्ञान एवं सिद्धान्त के संचयी विकास के लिये आधार प्रदान करता है । कून ने वैज्ञानिक क्रान्तिओं को "असंचयी विकासात्मक वृतान्तों के रूप में परिभाषित किया जिनमें पुराना प्रतिमान अप्रासंगिक नये प्रतिमान द्वारा पूरा का पूरा अथवा आंशिक रूप से प्रतिस्थापित होता है "।

एरेण्ड लैपहर्ट के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन ने विकास के ऐसे ही नम्ने का अनुसरण किया है । राज्य प्रभुसत्ता और अंतर्राष्ट्रीय अराजकता की अवधारणाओं पर आधारित पारम्परिक प्रतिमान को चुनौती दी गई, यद्यपि, जैसा कि पहले गौर किया गया, कि पुरातनता से लेकर अब तक अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के बारे में अनेक सिद्धान्त उद्विकासित हुए हैं और शोध की संसक्त परम्परा के लिये आधार जुटाया है । परिमाणात्मक और व्यवहारपरक चरण में सन्निविष्ट वैज्ञानिक क्रान्ति नृतन विचारधाराओं और प्रणालियों की बड़ी संख्या पर आधारित थी । यह धारणा थी कि प्राकृतिक विज्ञानों में प्रतिमानात्मक परिवर्तन से सम्बन्धित कुन का विशेषीकरण अथवा चरित्रचित्रण सामाजिक विज्ञानों में भी उसी प्रकार से अनुप्रयुक्त हो सकता है । बदले में, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में जो प्रतिमान अंतत: उभर कर आता है, यह कल्पना की गई कि, वह महत्त्वपूर्ण शोध प्रश्नों के लिये, स्वीकृत प्रणालियों के व्यापक अनुप्रयोग पर आधारित व्यापक सैद्धान्तिक प्रगतियों का आधार बनाएगा । इसी मान्यता पर प्रश्न उठाया गया है, और अक्सर इसे अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्त के उत्तरव्यवहारपरक, उत्तरप्रत्यक्षवादी और उत्तर आधृनिकवादी विचारधाराओं के समर्थकों द्वारा अस्वीकारा गया है । इस व्याख्या में, भौतिक विज्ञानों के लिये प्रतिमानात्मक विकास के बारे में कून की समझ की अनुप्रयोज्यता कितनी भी प्रामाणिक हो. वह अंतर्राष्ट्रीय-सम्बन्ध सिद्धान्त के उद्विकास का समृचित स्पष्टीकरण नहीं प्रदान करती है । सिंहावलोकन में कहा जा सकता है, कि व्यवहारवादी चरण, सिद्धान्त के आधार के रूप में, शोध पद्धतियों या प्रणाली पर ज्यादा संकेन्द्रित था, बजाय नये प्रतिमान के विकास अथवा सिद्धान्त निर्मित करने के लिये अन्य सैद्धान्तिक आधार पर संकेन्द्रित होने के ।

201	कून के अनुसार, वैज्ञानिक क्रान्ति की परिभाषा क्या है ?

According to Kuhn, what is the definition of scientific revolution?

15

D-02-11 27 P.T.O.

16.	Why does Lijphart think that the study of international relations follows the Kuhnian paradigm ? लैपहर्ट क्यों सोचते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन कूनवादी प्रतिमान का अनुसरण करता है ?
17.	What is the traditional paradigm of studying international relations ? अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन का पारम्परिक प्रतिमान क्या है ?

18.	What are the basic characteristics of the behavioural phase in the study of international relations?
	अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में व्यवहारवादी चरण की मूलभूत विशेषतायें क्या हैं ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा क अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत विशेषताय क्या ह ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा क अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत ावशषताय क्या ह ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा क अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत ावशषताय क्या ह ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा क अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत ावशषताय क्या ह ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा क अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत ावशषताय क्या ह ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा क अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत विशेषताय क्या है ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा के अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत विशेषताय क्या है ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा क अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत विशेषताय क्या ह ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा क अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत विशेषताय क्या ह ?
	अतराष्ट्राय सम्बन्धा के अध्ययन म व्यवहारवादा चरण का मूलभूत  वशषताय क्या ह ?
	अंतराष्ट्राय सम्बन्धा के अध्ययन म व्यवहारवादी चरण की मूलभूत विशेषतीय क्या है ?
	अंतराष्ट्राय सम्बन्धा के अध्ययन म व्यवहारवादी चरण की मूलभूत विशेषताय क्यों है ?

19.	What are the major approaches to the study of international relations in the post behavioural phase ? उत्तरव्यवहारवादी चरण में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन की मुख्य विचारधाराएँ क्या हैं ?

# **Space For Rough Work**

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words		
(in figure	es)	
Signature & Name of the Coordinator		
(Evaluation)	Date	